Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2019, VOL- 7/34

आचार्यप्रवरक रमानाथ झाक पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती मैथिली- आलोचनाक स्वरूप – निर्धारण

Neelam Kumari, Ph.D.

Abstract

प्रो0 रमानाथ झाजीसं पूर्व ओ पश्चात कतोक आलोचक मैथिलीक विभिन्न क्षेत्रमे कार्य कएलिन्ह अछि | पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती दुनू कोटिक रचनाकारक कला-कृतिस
मैथिली आलोचना-भण्डार धन-धान्य भेल अछि | रमानाथ बाबू पर यदि पूर्ववर्त्ती अलोचकक प्रभाव पड़ल तं निसंद्देह हिनकहु प्रभाव परवर्त्ती अलोचाकगण पर व्यापक रूपमे पड़ल, जे वस्तुतः अतीव गौरवक प्रतीक थीक, हुनक प्रकीतिर्त कीर्त्ति-महिमाक संकेतक थीक |

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

आचार्यप्रवरक आलोचना-क्षेत्रक अवदान बिना प्रश्नवाचक केर अविस्मरणीय थीक | किंतु ताहि संग इहो ध्यावत अछि जे हिनकास पूर्वहु कतोक आलोचक मैथिली साहित्यक एहि विधाकें समृद्ध -श्री वृद्धि करबामे महत योगदान दैत रहल छथि, जकर अपन पृथक महत्त्व रहल अछि | एहि आलोचकगण आलोचकीय रूप समीक्षा, समिति, निबंधादिमें पत्र-पत्रिकादिक माध्यमें दृष्टिगोचर होइत अछि |

मिथिला सर्वदास संस्कृत विधाक भूमि रहल अछि, ते संस्कृत-परम्पराक समालोचनाशास्त्रक प्रभाव मैथिली में सर्वाधिक प्रबल रहल अछि | ष मैथिलीक केओ प्रमुख समालोचक एहन नहि छथि जनिका पर "साहित्यदर्पण" "काव्यप्रकाश" आदि संस्कृत काव्यशास्त्रक प्रभाव नहि पडल हो | एहि ग्रंथ सभक अनुवाद मैथिली मे भेल अछि , किंतु मैथिलीक विद्वतगण सामंयारूपे मूल ग्रंथ पढ़ैत छथि | मैथिली मे अलंकार पर कतोक छोट-छोट ग्रंथ लिखल गेल अछि , यथा कविवर सीताराम झाक "अलंकार-दर्पण", दामोदर झाक "अलंकार-कम-लाकर" आ वेदानन्द झाक "अलंकृति बोध", | परंच रामचंद्र मिश्रक चंद्राभरण", आ महावैयाकरण पं० दीनबंधु झाक "अलंकार-सागर"5 सभस विस्तृत ग्रंथ अछि तथा महान श्रम एंव पांडितत्यक प्रतीक थीक |

मैथिली क्रतिक समीक्षणमे संस्कृत शास्त्रक सिद्धान्तक उपयोगक प्रबल समर्थकमे पं० श्रद्धिनाथ झाक नाम सर्वोपरि थीक | हिनक अप्रकाशित ग्रन्थ "शब्दशक्तित्रिवेणिका" मे अभिधा, लक्षणा ओ व्यंजना नामक तीन शब्द-शक्ति विवेचन कएल गेल अछि आ अपन "विश्वभूषण" मे ई एहि मतक प्रतिपादन

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कएलनि अछि जे काव्योत्कर्ष रस-परिपाके पर निर्भर करेछ | डा० किशोरनाथ झाक "रसनिरूपन" एहि विषय पर स्वतः सर्वांगपूर्ण आ वैदुष्य सं सम्रद्ध ग्रंथरत्न थीक |

मैथिली मे साहित्य-विषयक अन्वेषण ओ आलोचनाक शुभारम्भ कविश्वर चन्दा झासँ भेल जनिक लोचनक "राग्तारंगिनी", "विद्यापति-पदावली" एंव गोविंददासक "कृष्णकेलिलीला" आदि विशेष प्रसिद्ध छथि | एतदतिरिक्त हिनका द्वारा संकलित सहेबरामदासक पदावली ओ तकर सारगर्भित भूमिका सेहो अतिशय महत्त्व रखैत अछि | एतबे नहि, अपितु हिनक लेखनी सं विभिन्न कविक परिचय पर सेहो स्तुत्य कार्य भेल जे मैथिली-साहित्यक अध्यन कएनिहार लेल उपादेय रहल |

कविश्वरक पश्चात मैथिलीमे साहित्यानुसंधान आऽ अध्यन केर परंपरा स्थिरता पओलक पुस्तक-प्रकाशन एंव ओकर सभक भूमिका-लेखन द्वारा |

एहि दिशामे चेतनाथ झांक "पारिजातहरण" केर भूमिका, डा० गंगानाथ झा एंव डा० अमरनाथ झा द्वारा चन्द्र झाक "महेशवाणी संग्रह", हर्षनाथ ग्रंथावली, "गणनाथ झा ओ विन्ध्यनाथ झा-ग्रंथावली" आदिक भूमिका , डा० उमेश मिश्र केर मनबोधकृत "कृष्णजन्म" क भूमिका1 आदिक नाम समादरणीय थीक |

मैथिली साहित्यक गाम्भीर्य रूपें अध्यन करबाक दृष्टि सं कुमार गंगानंद सिंह, बाबू गंगापति सिंह एंव म0म0 डा० उमेश मिश्रक नामोलेख्रीय थीक | कुमार गंगानंद सिंह नेपालीय नाटकक भाषा ओ विषयसं संबद्ध तथ्यक सूक्ष्म अध्यन कएल तं बाबू गंगापति सिंह मैथिलीक प्राचीन ओ नवीन सामग्री के क्रमबद्धताक संग तीन हिस्सामे संकलित कएल, किन्तु से अप्रकाशित रहि गेल |

1924 मं 1938 ई0 धरि मैथिलीक दिशामे प्रमुख कार्य भेल एकर स्वतन्त्र अस्तित्व प्रमाणित करब | एहि क्रममे भाषावैज्ञानिक अनुसंधान ओ एतिहासिक सामग्री-संचयन कए व्याख्यान आदिक स्वरूप एहि मिमित्व उभरल | डा० सर गंगानाथ झा, बाबू भोलालाल दास, रामभद्र झा, डा० सुधाकर झा, कुमार गंगानंद सिंह, म0म0 डा० उमेश मिश्र, भुवनेश्वर सिंह "भुवन", पं0 दीनबंधु झा, पं0 शिनंदन ठाकुर तथा डा० सुभद्र झाक संग-संग प्रो0 रमानाथ झा जीक एहि क्षेत्रमे विशेषरूपसं प्रकाशमे आएल |

एही क्रममे प्रोढ़ता-प्राप्त आलोचकक रूपमे ज्यो0 बलदेव मिश्र, नरेंद्र नाथ दास, बाबू लक्ष्मीपति सिंह, प्रो0 श्रीकृष्ण मिश्र आदिक नाम सेहो विशेष चर्चित अछि | एहि कोटिमे सुप्रसिद्ध मैथिलीक इतिहासकार डा० जयकांत मिश्रक नाम लेल जा सकैत अछि, जनिकर "मैथिलीक साहित्यक इतिहास" 1 मैथिली साहित्य-जगतमे अति ख्याति प्राप्त कएलक |

पं0 शिवनंदन ठाकुर द्वारा संपादित भेल "विशुद्ध-विद्यापति पदावली" ओ "महाकवि विद्यापति" | दोसर पोथीमे चर्यापद पर सेहो गवेश्नापूर्ण विचार पंडितजी द्वारा भेल अछि | एकर अतिरिक्त पं0 शशिनाथ चौधरीक "चंदा झाक रामायण आ "कन्यादान-द्विरागमन", ज्यो0 बलदेव मिश्र केर "चंदा झा", नरेंद्रनाथ

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दासक "चर्यापद", "विद्यापतिकाव्यलोकन", "कृष्णजन्मसमीक्षा", गोविंददास" एंव "किरात्नियाँ रंगमंच", बाबू लक्ष्मीपति सिंह केर "मैथिलीक ग्राम्यगीतावली" एंव "आधुनिक मैथिली कवि", डा0 श्रीकृष्ण मिश्रक "मनबोध" तथा "कन्यादानसमीक्षा" प्रभति केर उल्लेख अपेक्षित थीक |

सम्प्रत्य थोक जे अल्पायु भेल मैथिली-क्षेत्रक प्रख्यात कवि-समालोचक "भुवनजी" अपन उपनाम "राजहंस"क रूपमे कटक मैथिली पोथिके समिक्षिक्ष कएल, जे अत्युत्क्रष्ट भेल | "विभूति" मे छपल समालोचनात्मक निबंध हिनकही द्वारा प्रणीत थीक | रामदास द्वारा सृजित "आनंद्विजय"3क सम्पादन ओ भूमिका लेखन ई अति विलक्षणताक संग कएल |

डा0 अमरनाथ झा लिखने छथि—"मैथिली भाषा मे आलोचनात्मक साहित्य लिखनिहारक कमी नहि अछि | म0म0 डा0 उमेश मिश्र, डा0 सुभद्र झा, भोलालाल दास, प्रो0 श्रीकृष्ण मिश्र,, डा0 जयकांत मिश्र, प्रो0 बुद्धिधारी सिंह "रमाकर", डा0 शैलेन्द्र मोहन झा, डा0 नवीन चन्द्र मिश्र, डा0 श्री जय-धारी सिंह, पं0 श्री चन्द्रनाथ मिश्र "अमर", पं0 श्री गोविंद झा, "श्रीश", डा0 अमरेश पाठक, डा0 लेखनाथ मिश्र, डा0 दिनेश कुमार झा, डा0 इन्द्रकांत झा, श्री राजमोहन झा, डा0 रामदेव झा, डा0 प्रेमशंकर सिंह, डा0 विश्वेश्वर मिश्र, श्री मोहन भरद्वाज, श्री रामानंद "रेणु", डा0 धीरेश्वर झा "धीरेन्द्र", सोमदेव, डा0 भीमनाथ झा, श्री कीर्ति नारायण मिश्र, श्री वीरेन्द्र मल्लिक, श्री तारानंद वियोगी तथा आओरो अनेकानेक विद्वान् लोकनिक आलोचनात्मक लेख उपलब्ध भए रहल अछि |"

विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्रवेशसं एकर आलोचना-विद्या दिशि विद्वत्वर्गक ध्यान गेल | संस्कृतक पुरान पंडित लोकनिमे महामहोपाध्याय ओ धौतपरीक्शोत्तिर्ण उपाधिधारी सम्मानित सं लए अन्याय विद्वान लोकनि पर्यंत मैथिलीक प्रग्रात हेतु चिंतित भेलाह ओ एहि हेतु पत्र-पत्रिका दिशि सेहो ध्यान देमए लगलाह | पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन होइत रहल, समय-समय पर, जोहिमे कतोक विद्वानक निबंध, समीक्षा, पाठकीय पत्र आदि प्रकाशमे आएल | एहिमे अलोचकाक यथार्थ रूप झलकए-चमकए लागल | छिद्रान्वेष्णसं लए स्वस्थ आलोचना धरि, एहिमे स्थान ग्रहण कएलक |

रचनात्मक मैथिलीक-साहित्यिक विकासमे प्रो0 तंत्रनाथ झा, प्रो0 परमाकांत चौधरी, सुमनजी, ईशनाथ झा ओ श्री दीनानाथ झा2 लोकनिक नाम सक्रिय रूपसं लेल जाइछ | रामनाथबाबूक आग्रहे ई लोकनि आलोचनात्मक कतिपय रचना कए मैथिली आलोचना-उधानके पल्लवित-पुष्पित कए सुरभि-सौरभक स्रजनक प्रयास कएल |

मैथिली पत्रकारिता-जगतमे "मैथिल हित-साधन"क जन्म 1905 ई0 मे भेल, जे मैथिलीक प्रथम मासिक पत्रिका छल | एहिमे कविश्वर चंदा झा, मधुसूदन झा, सोने लाल झा, गणेशदत्त पाठक, रामभद्र

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

झा, यदुनाथ झा, आ जीवन झा याज्ञवल्क्य आदिक आलोचनात्मक रचना प्रकाशमे अबैत रहल, परंच ई पत्रिका मात्र करीब तीन वर्ष धरि चलि तिरोहि भए गेल |

एहि पत्रिकामे गंभीर सं गंभीर निबंधादि प्रकाशित होइत छल, जकर सध: प्रमाण निम्न अंश सं भेटैत अछि—"जनिका सबहिके हाहा-हीही, लल्लो-चप्पो, गीत-कवित्तक अतिरिक्त गंभीर लेखसबहिक रसास्वादक योग्यता नहि छिन्ह ताद्रश व्यक्तिक ग्राहक नहि रह्बास हित-साधनक कोनो त्रुटी नहि |"

पत्रिका-जगतक मैथिली मे दोसर स्थान "मिथिला-मोद" क रहल जे मासिक रूपमे बनारससं प्रकाशित होइत छल | एकर सम्पादन म0म0 मुरलीधर झा, अनूप मिश्र, सीताराम झा तथा उपेन्द्रनाथ झा द्वारा 1906 सं 1941 ई0 केर मध्य भेल | एहि पत्रिकामे त्रिलोचन झा, रामचंद्र मिश्र, अनूप मिश्र, कुशेश्वर कुमार, सीताराम झा, ज्योतिषी बलदेव मिश्र एंव उमेश मिश्रक रचना प्रकाशित होइत रहल | एहिसं मैथिलीक आलोचना-क्षेत्रमे सबलता अएलैक |

1911 ई0 मे "मिथिला-मिहिर" साप्ताहिकक शुभारम्भ भेल, जे प्रारंभ मे त्रैमासिक झा, जगदीश प्रसाद ओझा, योगानंद कुमर, जनार्दन झा "जनसीदन", कपिलेश्वर झा "शास्त्री" एंव सुरेन्द्र झा "सुमन" भेलाह | "मिथिला-मिहिर"क सम्पादकीयमे आलोचनाक स्वरुप तं उभरिते छल संगहि रचनाकारक मे आलोचना विषयक वस्तु प्रौढ़ता प्राप्त करैत रहल, किन्तु से क्रमिक | एही क्रममे विभिन्न समय मे मिथिलांचल किंवा प्रवासमे रहनिहार मैथिल द्वारा पत्र-पत्रिका प्रकाशित होइत रहलैक जाहिमे अनेकानेक तत्कालीन विद्वान् सभक गवेषणापूर्ण सारगर्भित निबंध, समीक्षा ओ विचार, सम्मति आदि समाहित भए मैथिली-अलोचनाके ठोस बनएबामे स्तुत्य साहायय प्रदान कएलक |

एहि दिशा में पुलकित लाल दास "मधुर", छेदी झा "मधुप", तथा यदुनाथ झा "यदुवर", रघुनन्दन दास, प्रमथनाथ मिश्र, उदित नारायण दास तथा नंदकिशोर लाल आदिक नाम उल्लेखनीय थीक |

"मैथिली" क प्रकाशनक उद्देश्य रहल मिथिलाभाषाक प्रौढ़ता सम्पादन | ...जाहि भाषामध्य सर्वप्रथम हृदयमध्य हर्ष-शोक, गौरव-घ्रणा आदि नाना भावक उत्थान होइत अछि ताहि भाषाक रक्षा ओ वृद्धि करब हमरा लोकनिक प्रथम कर्तव्य |"

डा0 जयकांत मिश्र एहि पत्रिका सभक आलोचना-दिशामे योगदानक सम्बन्धमे लिखने छथि – "They encouraged literary criticism and longer essays on useful subjects. Its influence on the language was to widen the scope of the language so as to include non-literary subjects."

एहिना मैथिलीक आलोचना-भूमि पर अवतीर्ण भेलाह प्रो0 हरिमोहन झा सदृश अवतारी मनीषी, जनिक आलोचन एखनहि अपितु यावात्पर्यंत मिथिला मैथिल, मैथिली रहत तावत धरि मिथिला किंवा मिथिलेतर

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रान्तहुक लोक-कंठ मे विद्यमान रहत, से गौरवक संग कहल जा सकैछ | हिनकहि समकालीन भेल छथि काली कुमार दास, श्रीमती शाम्भवी देवी आदि जनिका लोकनिक आलोचना-क्षेत्रक अवदान सराहनीय थीक |

अन्य पत्रिकाक सम्पादन-क्षेत्र मे जे कार्य भेल ताहुसं मैथिलीक आलोचना-पक्षमे हरियरी एलैक | एहि क्रममे गौरीनाथ झा, धनुषधारी लाल दास, महेश झा एंव शशिनाथ चौधरी क नामोल्लेख्रीय थीक | एतदतिरिक्त नहि विस्मृत कएल जा सकैछ महावीर झा "वीर" बल्लभ झा, विद्याभूषण "जीव" एंव श्यामानंद झाक क्रवित्त्के |

आलोचना-क्षेत्रक विभूतिमे रघुनाथ प्रसाद मिश्र, चुन्नीलाल झा, ब्रजमोहन झा आदिक नाम सेहो अग्रगण्य थीक, जनिका लोकनिक अथक प्रयत्ने देशक विभिन्न स्थानसं पत्र-पत्रिका बहार भेल, जाहिमे नाना प्रकारक आलोचनात्मक रचनाक सेहो समावेश रहल | द्रष्टव्य थीक निम्नांश ---

"द भारती वाज पब्लिश बाइ लरत मैथिली साहित्या परिषद् दरभंगा एंड एडिटेड बाइ बाबू भोला लाल दास, इट्स कोन्त्रिब्युश्न्स वेयर सीरियस एस्सेस इन लिटरेरी क्रिटिसिज्म ट्रेवल फिक्शन इटीसी."

मैथिली आलोचनाक विकासमे पत्र-पत्रिकाक महत्त्वपूर्ण अवदान रहल अछि | भाषा ओ साहित्य-सम्बन्धी कतोक तथ्यके पत्रिका सभक माध्यमे प्रकाश्मे आनल गेल | एहि विषयमे डा0 जयकांत मिश्र लिखने छथि—

"The New influence entered very Prominently into Maithili through journalism, people were awakened; the lines of creative writing were introduced; old lines were reviewed or modified such little things as Punctuation, Paragraphing, spelling, etc, received a definition; and a gradual adaptation of Maithili Literature to ne mode of writing, more suited to Printing and to the wider reading of Maithili, and a spirit of service to the land was inculcated; and in fine modern Maithili Literature came into being."1

साहित्यिक आलोचनाक जे विकास-क्रममे अभीवृद्धि भेल तकर सर्वश्रेष्ठ कारण रहल विभिन्न विश्विद्यालय मे मैथिलीक उच्च शिक्षा मे स्वीकृति सं | फलतः कतोक पत्र-पत्रिकाक अतिरिक्त स्वतन्त्र आलोचनापरक पोथी सेहो दिन-प्रतिदिन नव-नव रूपमे समक्ष आबि रहल अछि, जे मैथिली-साहित्यिक अलोचनाके सद्रढ-सम्रद्ध कए रहल अछि |

आचार्य रमानाथ झाजीक आलोचकीय लेखनीक दूरगामी प्रभाव भेल | हिनक भव्य-भावना ओ वैचारिक प्रौढ़त्त्के देखि पर्वत्ति अलोचाक्गन सेहो विभिन्न रूपमे अनुसंधान, निबंध, समीक्षा, संपत्ति-लेखन आदिक दिशामे क्रियाशील देखल जाइत छथि | कतोक विद्वानक रचनामे आचार्य स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होइछ |

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शोध-प्रबंध, शोध-निबंध, स्वतंत्र निबंध, पाठकीय-पत्र, सम्पादकीय आदि आलोचनाक मापदंडक उत्तम कसौटी थिक | वर्तमान कालमे मैथिली भाषामे शताधिक-प्रबंध ओ सहस्त्रक करीब शोध-निबंध किंवा स्वतन्त्र-निबंध प्रकाशमे आएल अछि, जाहिमे मैथिली-आलोचनाक दशा-दिशा दृष्टिगत होइछ | प्राय: साहित्यक कोनो एहन विद्या नहि अछि, जाहिमे अलोचनाक दृष्टियें आलोचक अपन मन्तव्य नहि देथि होथि |

मैथिली आलोचनाक महलके उठाएबामे मैथिली-शिक्षकक प्रमुख श्रेय रहल अछि | एहि श्रेणीक अलोचाकगनमे प्रो0 जयदेव मिश्रक "मिथिलाक हास्य-साहित्य", प्रो0 ईशनाथ झाक "गोविंददासक पदक टीका", प्रो0 तंत्रनाथ झाक "संतकवि साहेब रामदास", सुमनजीक "मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव एंव काव्यसाहित्यक लक्ष्य", प्रो0 राधाकृष्ण चौधरीक "साहित्यिक निबंधावली", डा0 जयकांत मिश्रक "मिथिलाक जन-साहित्य", डा0 महेश्वरी सिंह "महेश" व "मैथिली गद्यक स्थिति" ओ उमानाथ झाक "वर्तमान मैथिली कविता : कि छु विचार", प्रो0 आनंद मिश्रक "मैथिली नाटकक विकास", डा0 जयमंत मिश्रक "मैथिली नाटक पर संस्कृत प्रभाव", प्रो0 हिन्नारायण झाक "साहित्यक निबंधावली", चंदा झा ओ वर्ड्सवर्थ, प्रो0 बुद्धिधारी सिंह "रमाकर"क "पंचाम्रत" एंव "मैथिली काव्य-धारा", प्रो0 भक्तिनाथ सिंह ठाकुरक "गल्प साहित्य ओ तकर विकास" श्री दामोदर झाक "प्रगतिवाद", परमानंद झाक "मैथिली निबंध-निकुंज", मैथिली नव-निबंधावली", डा0 शैलेन्द्र मोहन झाक "परिचयपात", डा0 जयधारी सिंह "प्रभाकर"क "सुन्दरकाण्ड : एक समीक्षा", सं0 "पंचाम्रत", "गोविंद काव्यालोक", डा0 दुर्गानाथ झा "श्रीश"क सं0 "साहित्य-विमर्श", "प्राक्रतकपैनगलम मे मैथिली कविता", डा0 केदारनाथ लाभक "काव्यमे अलंकारक प्रयोजन", डा0 विश्वेश्वर मिश्रक "विद्यापतिक काव्य-साधना" ग्रंथ डा0 नवीन चन्द्र मिश्रक "प्रतिपदा" : एक अध्यन", "अन्कीया-नाट-विवेचन", पोथी, डा0 अमरनाथ झाक "दुतबिलम्बित", डा0 प्रेमशंकर सिंहक "मैथिली नाटक-परिचय" ग्रंथ, डा0 रामदेव झाक हरगौरी विवाह नाटक", विद्यापति-गीतक नव-स्त्रोत", डा0 इन्द्रकांत झाक "शोध-रत्नाकार", "विद्यापति-विमर्श", डा0 नरनाथ झाक "विविध-प्रबंध", डा0 बासुकीनाथ झाक "मंबोधक कृष्णजन्म, ग्रंथ-अनुशीलनक अबबोध एंव "परिवह" ; प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन"क "मोरंग-वंशीवलीक अध्यन", प्रो0 हरिमोहन मिश्रक "आधुनिक मैथिली कविता", डा0 जगदीप मिश्रक "शास्त्री प्रबंध", डा0 देवेन्द्र झाक "मैथिलीक शब्द-सामर्थ्य", डा0 भीमनाथ झाक "परिचायिका", डा0 धीरेन्द्र नाथ मिश्रक "परिचय-प्रसून", डा0 जतेश्वर झा "जटिल"क "मैथिली रंगमंच ओ ओकर भविष्य", डा0 शिवाकांत ठाकुरक "मैथिली कवि-परिचय", आचार्य परमानन्द झा शास्त्रिक "क्रन्तिकारी विद्यापति", बृजकिशोर बर्माक "नागार्जुनक चिंतन-धारा", मधुपक "गुंजन", किसुनजीक "कव्येषु नाटकं रम्यम", नाचिकेताक "नाटकक स्वरूप निर्धारण आ मैथिली नाटक"; कुलानंद झाक

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

"पयस्विनीक जीवन-दर्शन", राजकमल "कथासाहित्यक विषटन आ समस्या", मायानंद मिश्रक "अभिव्यन्जनाक सम्पादकीय लेख, हिमांशुशेखर झाक "परंपरा आ युगबोध", डा0 दिनेश कुमार झाक "मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास", ओ एतदतिरिक्त कतोक शोध-प्रबंध आदि प्रकाशित ओ अप्रकाशित दृष्टिगत होईछ जे आलोचना-विधाक समृद्धिमे योगदान दैत रहल अछि |

References:

मैथिली साहित्यिक इतिहास- डा० दुर्गानाथ झा "श्रीश"
अलंकार-दर्पण-सीताराम झा
मैथिली गद्य-साहित्य राष्ट्रिय संगोष्ठी – पटना वि0 वि0
रमानाथ झा अभिनन्दन-ग्रंथ- |
अलंकार-कमलाकर-दामोदर झा
अलंकृति-बोध- वेदानन्द झा
चंद्रभारण-रामचन्द्र मिश्र
अलंकार-सागर- दीनबन्धु झा
मैथिली साहित्यक इतिहास , डा० जयकांत मिश्र
विश्वभूषण - श्रद्धिनाथ झा
रस-निरूपण- डा० किशोरनाथ झा
विभूति-
मैथिल-हित-साधन,वॉल्यूम-2, नूतन वत्सरारम्भ
शशिनाथ चौधरीक रचना-"मिथिला मिहिरिक सम्पादन".

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies